

B. A 3rd Semester
Macro Economics
Paper Code-A080301TN

1. मैक्रोइकॉनॉमिक्स (समष्टि अर्थशास्त्र) क्या है और इसकी मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

समष्टि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत इकाइयों के बजाय संपूर्ण अर्थव्यवस्था के व्यवहार, प्रदर्शन और संरचना का अध्ययन करती है। इसमें कुल उत्पादन, कुल रोजगार, मुद्रास्फीति, राष्ट्रीय आय और आर्थिक विकास जैसे व्यापक विषयों का विश्लेषण किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य संपूर्ण अर्थव्यवस्था में संतुलन और स्थिरता बनाए रखना है।

इसकी प्रमुख विशेषताओं में संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन शामिल है, जिसे 'योग दृष्टिकोण' (Aggregative Approach) भी कहा जाता है। इसमें समष्टिगत चरों जैसे कुल मांग, कुल पूर्ति, और कुल बचत का एक साथ अध्ययन किया जाता है। यह आय और रोजगार के स्तर को निर्धारित करने में मदद करता है, इसलिए इसे आय और रोजगार का सिद्धांत भी कहा जाता है।

इसके अलावा, यह नीति-निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाता है। सरकारें राजकोषीय और मौद्रिक नीतियां बनाने के लिए समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का उपयोग करती हैं। इसका अध्ययन देश की आर्थिक वृद्धि दर और वैश्विक आर्थिक संबंधों को समझने के लिए अनिवार्य माना जाता है।

2. माइक्रोइकॉनॉमिक्स और मैक्रोइकॉनॉमिक्स में क्या मुख्य अंतर हैं?

सूक्ष्म अर्थशास्त्र (माइक्रोइकॉनॉमिक्स) और समष्टि अर्थशास्त्र (मैक्रोइकॉनॉमिक्स) अर्थशास्त्र के दो मुख्य विभाग हैं। माइक्रोइकॉनॉमिक्स में व्यक्तिगत उपभोक्ता, फर्म या विशिष्ट बाजार की आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है, जबकि मैक्रोइकॉनॉमिक्स में संपूर्ण अर्थव्यवस्था के योगों का अध्ययन किया जाता है।

मुख्य अंतर निम्नलिखित तालिका द्वारा समझा जा सकता है:

आधार	माइक्रोइकॉनॉमिक्स (सूक्ष्म)	मैक्रोइकॉनॉमिक्स (समष्टि)
अध्ययन की इकाई	व्यक्तिगत इकाई (जैसे एक फर्म)	संपूर्ण अर्थव्यवस्था (जैसे कुल आय)
मुख्य चर	कीमत, मांग, पूर्ति	राष्ट्रीय आय, कुल रोजगार, मुद्रास्फीति
मूल उद्देश्य	संसाधनों का इष्टतम आवंटन	पूर्ण रोजगार और आर्थिक स्थिरता
अन्य नाम	कीमत सिद्धांत (Price Theory)	आय एवं रोजगार सिद्धांत

सूक्ष्म अर्थशास्त्र में यह माना जाता है कि समष्टि चर स्थिर रहते हैं, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र में सूक्ष्म चरों को स्थिर माना जाता है। हालांकि, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, क्योंकि व्यक्तिगत निर्णयों का प्रभाव ही अंततः समष्टिगत परिणामों में दिखाई देता है।

3. राष्ट्रीय आय (National Income) से आप क्या समझते हैं? इसे मापने की प्रमुख विधियां कौन-कौन सी हैं?

राष्ट्रीय आय से तात्पर्य किसी देश में एक वित्तीय वर्ष के दौरान उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के कुल योग से है। इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) भी शामिल होती है। यह किसी देश के आर्थिक स्वास्थ्य और उसके नागरिकों के जीवन स्तर का सबसे प्रमुख सूचक है।

राष्ट्रीय आय को मापने की मुख्य रूप से तीन विधियां हैं:

उत्पाद या मूल्य वर्धित विधि (Product/Value Added Method): इसमें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों (प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक) में उत्पादित अंतिम वस्तुओं के मूल्य को जोड़ा जाता है।

आय विधि (Income Method): इसमें उत्पादन के साधनों को मिलने वाले भुगतानों जैसे मजदूरी, लगान, ब्याज और लाभ का योग किया जाता है।

व्यय विधि (Expenditure Method): इसमें उपभोक्ताओं, व्यवसायों और सरकार द्वारा किए गए कुल अंतिम व्यय को जोड़ा जाता है।

सैद्धांतिक रूप से, इन तीनों विधियों से प्राप्त परिणाम समान होने चाहिए क्योंकि एक का व्यय दूसरे की आय बनता है।

4. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में क्या अंतर है?

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) दोनों ही राष्ट्रीय आय के माप हैं, लेकिन इनकी सीमाएं भिन्न हैं। GDP का संबंध भौगोलिक सीमा से है, जबकि GNP का संबंध देश के नागरिकों से है।

GDP: एक वित्तीय वर्ष में देश की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य GDP कहलाता है। इसमें देश में काम कर रहे विदेशी नागरिकों का उत्पादन भी शामिल होता है।

GNP: यह देश के निवासियों द्वारा उत्पादित कुल मूल्य है, चाहे वे देश में हों या विदेशों में।

दोनों के बीच का मुख्य अंतर विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) है:

$$\text{GNP} = \text{GDP} + \text{NFIA}$$

यदि किसी देश के नागरिक विदेशों से जितना कमाते हैं, उससे अधिक विदेशी नागरिक उस देश से कमाकर बाहर भेजते हैं, तो उस देश का GDP उसके GNP से बड़ा होगा।

5. वास्तविक GDP (Real GDP) और नाममात्र GDP (Nominal GDP) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

नाममात्र GDP (Nominal GDP) की गणना वर्तमान बाजार कीमतों पर की जाती है, जबकि वास्तविक GDP (Real GDP) की गणना किसी आधार वर्ष (Base Year) की स्थिर कीमतों पर की जाती है। यह अंतर आर्थिक वृद्धि को मापने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नाममात्र GDP में वृद्धि दो कारणों से हो सकती है: या तो वस्तुओं का वास्तविक उत्पादन बढ़ा हो, या केवल कीमतें (मुद्रास्फीति) बढ़ी हों। इसलिए, नाममात्र GDP हमेशा अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाता।

दूसरी ओर, वास्तविक GDP केवल भौतिक उत्पादन में परिवर्तन को दर्शाता है क्योंकि कीमतें स्थिर रखी जाती हैं। इसलिए, वास्तविक GDP को ही आर्थिक विकास का सही सूचक माना जाता है।

दोनों के अनुपात को GDP डिफ्लेटर कहा जाता है, जो अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के स्तर को मापता है:

$$\text{GDP डिफ्लेटर} = \left(\frac{\text{Nominal GDP}}{\text{Real GDP}} \right) \times 100$$

6. राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income) के दो-क्षेत्रीय मॉडल की व्याख्या कीजिए।

राष्ट्रीय आय का चक्रीय प्रवाह यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच आय और उत्पादन का निरंतर प्रवाह किस प्रकार होता है। दो-क्षेत्रीय मॉडल में केवल दो इकाइयां शामिल होती हैं: परिवार (Households) और व्यवसाय/फर्म (Business Firms)

साधन प्रवाह (Real Flow): परिवार क्षेत्र फर्मों को उत्पादन के साधन (भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यम) प्रदान करता है। फर्म इन साधनों का उपयोग करके वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करती हैं और उन्हें परिवारों को बेचती हैं।

मौद्रिक प्रवाह (Money Flow): फर्म साधनों के उपयोग के बदले परिवारों को साधन भुगतान (लगान, मजदूरी, ब्याज, लाभ) देती हैं। परिवार इस आय को फर्मों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को खरीदने पर खर्च करते हैं।

यह चक्र निरंतर चलता रहता है। इस मॉडल में यह मान लिया जाता है कि न तो कोई बचत होती है और न ही सरकार या विदेशी व्यापार की कोई भूमिका होती है, जिससे कुल उत्पादन हमेशा कुल व्यय के बराबर रहता है।

7. से का बाजार नियम (Say's Law of Markets) क्या है?

फ्रांसीसी अर्थशास्त्री जे.बी. से (J.B. Say) का बाजार नियम शास्त्रीय (Classical) अर्थशास्त्र का एक मूलभूत आधार है। इसका मुख्य सिद्धांत है: "पूर्ति अपनी मांग स्वयं सृजित करती है" (Supply creates its own demand)।

इस नियम के अनुसार, जब अर्थव्यवस्था में किसी वस्तु का उत्पादन होता है, तो उसी प्रक्रिया में उत्पादन के साधनों को मजदूरी, ब्याज, लगान आदि के रूप में आय प्राप्त होती है। यह आय स्वचालित रूप से बाजार में वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च कर दी जाती है।

इसके प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

अर्थव्यवस्था में कभी भी सामान्य अति-उत्पाद (General Overproduction) संभव नहीं है।

सामान्य बेरोजगारी की स्थिति नहीं हो सकती; अर्थव्यवस्था में हमेशा पूर्ण रोजगार की प्रवृत्ति पाई जाती है।

यदि कभी आंशिक बेरोजगारी या अति-उत्पादन होता भी है, तो लचीली मजदूरी और कीमतों के माध्यम से स्वचालित समायोजन हो जाता है।

क्लासिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम के आधार पर माना कि सरकार को बाजार में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

8. केन्स का प्रभावी मांग का सिद्धांत (Keynesian Theory of Effective Demand) क्या है?

जॉन मेनार्ड केन्स ने 1936 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द जनरल थ्योरी' में प्रभावी मांग के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत शास्त्रीय अर्थशास्त्र के 'से के नियम' का खंडन करता है और समष्टि अर्थशास्त्र का केंद्रीय बिंदु है।

प्रभावी मांग वह मांग है जिस पर अर्थव्यवस्था में कुल मांग (Aggregate Demand) और कुल पूर्ति (Aggregate Supply) एक-दूसरे के बराबर हो जाते हैं। जहाँ ये दोनों वक्र काटते हैं, वहीं संतुलन आय और रोजगार का स्तर निर्धारित होता है।

इसके दो मुख्य घटक हैं:

कुल मांग (AD): उपभोग व्यय (C) और निवेश व्यय (I) का योग ($AD = C + I$)।

कुल पूर्ति (AS): अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं का कुल मूल्य जो आय के बराबर होता है ($AS = Y = C + S$)।

केन्स के अनुसार, अल्पकाल में कुल पूर्ति को आसानी से नहीं बदला जा सकता, इसलिए रोजगार और आय का स्तर बढ़ाने के लिए कुल मांग (विशेषकर निवेश) को बढ़ाना आवश्यक होता है।

9. उपभोग फलन (Consumption Function) क्या है? इसकी विशेषताएं बताइए।

उपभोग फलन उपभोग व्यय (\$C\$) और प्रयोज्य आय (\$Y\$) के बीच के कार्यात्मक संबंध को दर्शाता है। इसे गणितीय रूप में $C = f(Y)$ द्वारा व्यक्त किया जाता है। आय बढ़ने पर उपभोग भी बढ़ता है, लेकिन उपभोग में वृद्धि आय में वृद्धि की तुलना में कम होती है।

उपभोग फलन के दो प्रमुख रूप हैं:

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC): कुल उपभोग और कुल आय का अनुपात ($APC = C / Y$)

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC): आय में परिवर्तन के कारण उपभोग में होने वाले परिवर्तन का अनुपात ($MPC = \Delta C / \Delta Y$)।

केन्स के मनोवैज्ञानिक नियम (Psychological Law of Consumption) के अनुसार:

आय बढ़ने पर उपभोग बढ़ता है लेकिन कम अनुपात में।

बढ़ी हुई आय उपभोग और बचत दोनों में विभाजित हो जाती है।

MPC का मान हमेशा 0 और 1 के बीच होता है ($0 < MPC < 1$)

10. गुणक (Multiplier) का सिद्धांत क्या है और यह कैसे कार्य करता है?

केन्स का गुणक सिद्धांत यह दर्शाता है कि स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment) में होने वाले प्रारंभिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में कितने गुना वृद्धि होती है। इसे '\$K\$' से दर्शाया जाता है।

गणितीय रूप से, गुणक राष्ट्रीय आय में परिवर्तन (ΔY) और निवेश में परिवर्तन (ΔI) का अनुपात है:

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

गुणक का आकार सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) पर निर्भर करता है:

$$K = \frac{1}{1 - MPC}$$

यदि MPC अधिक है, तो लोग बढ़ी हुई आय का बड़ा हिस्सा खर्च करेंगे, जिससे दूसरों की आय बढ़ेगी और गुणक का मान भी अधिक होगा। उदाहरण के लिए, यदि $MPC = 0.8$ (80%) है, तो गुणक का मान $1 / (1 - 0.8) = 5$ होगा। इसका अर्थ है कि ₹100 का नया निवेश आय में ₹500 की कुल वृद्धि लाएगा।

11. त्वरक सिद्धांत (Accelerator Theory) क्या है?

त्वरक का सिद्धांत (Principle of Accelerator) यह बताता है कि उपभोग मांग या अंतिम वस्तुओं की मांग में होने वाले परिवर्तन का पूंजीगत वस्तुओं (निवेश) की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसे जे.एम. क्लार्क और अन्य अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया था।

गुणक यह दिखाता है कि निवेश का आय पर क्या प्रभाव पड़ता है, जबकि त्वरक यह दिखाता है कि उपभोग या आय में परिवर्तन का निवेश पर क्या प्रभाव पड़ता है।

त्वरक गुणांक (β) को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है:

$$\beta = \frac{\Delta I}{\Delta C}$$

जब उपभोग वस्तुओं की मांग बढ़ती है, तो फर्मों को अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ानी पड़ती है, जिसके लिए वे नई

मशीनों और उपकरणों (पूंजी) में निवेश करती हैं। यदि मांग थोड़ी भी बढ़ती है, तो पूंजीगत निवेश में कई गुना वृद्धि हो सकती है।

12. गुणक और त्वरक की परस्पर क्रिया (Super Multiplier) को समझाइए।

सुपर गुणक (Super Multiplier) का सिद्धांत प्रो. पॉल सैमुएलसन और जे.आर. हिक्स द्वारा दिया गया था। यह सिद्धांत आय और निवेश के बीच गुणक और त्वरक की संयुक्त और परस्पर क्रिया को स्पष्ट करता है।

प्रक्रिया इस प्रकार चलती है:

स्वायत्त निवेश में वृद्धि से गुणक क्रिया के माध्यम से आय और उपभोग बढ़ता है।

उपभोग में इस वृद्धि के कारण त्वरक क्रियाशील होता है, जिससे प्रेरित निवेश (Induced Investment) बढ़ता है।

यह नया प्रेरित निवेश पुनः गुणक को सक्रिय करता है, जिससे आय में और अधिक वृद्धि होती है।

यह चक्रीय प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में व्यापार चक्रों (Trade Cycles) या उतार-चढ़ाव को जन्म देती है। केवल गुणक या केवल त्वरक अलग से अर्थव्यवस्था के आय परिवर्तनों की पूरी व्याख्या नहीं कर सकते।

13. मुद्रा (Money) क्या है? इसके मुख्य कार्य कौन-कौन से हैं?

मुद्रा कोई भी ऐसी वस्तु है जिसे व्यापक रूप से विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, और मूल्य के संचय के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter System) की कमियों को दूर करने के लिए अस्तित्व में आई।

मुद्रा के मुख्य कार्यों को चार श्रेणियों में बांटा गया है:

प्राथमिक कार्य:

विनिमय का माध्यम: वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय को सरल बनाती है।

मूल्य का मापक: सभी वस्तुओं का मूल्य मुद्रा के रूप में मापा जाता है।

द्वितीयक कार्य:

स्थगित भुगतानों का मान: भविष्य के भुगतानों और ऋणों का आधार।

मूल्य का संचय: धन को भविष्य के लिए आसानी से संचित किया जा सकता है।

आकस्मिक कार्य: राष्ट्रीय आय का वितरण, साख का आधार आदि।

14. मुद्रा की पूर्ति (Money Supply) के विभिन्न माप (\$M_1, M_2, M_3, M_4\$) क्या हैं?

भारत में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) मुद्रा की पूर्ति को मापने के लिए चार मौद्रिक समुच्चय (Monetary Aggregates) का उपयोग करता है:

M_1 (\$ (संकीर्ण मुद्रा - Narrow Money):

$$M_1 = \text{जनता के पास मुद्रा (नोट + सिक्के)} + \text{बैंकों के पास मांग जमा (Demand Deposits)} + \text{RBI के पास अन्य जमा}$$

M_2 :

$$M_2 = M_1 + \text{डाकघर बचत बैंकों की बचत जमा}$$

M_3 (व्यापक मुद्रा - Broad Money):

$$M_3 = M_1 + \text{बैंकों के पास सावधि जमा (Time/Term Deposits)}$$

M_4 :

$$M_4 = M_3 + \text{डाकघर की कुल जमा (राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र को छोड़कर)}$$

इनमें M_1 सबसे अधिक तरल (Liquid) है, जबकि M_4 सबसे कम तरल है। नीति निर्माण में M_3 का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है।

15. मुद्रा का परिमाण सिद्धांत (Fisher's Quantity Theory of Money) क्या है?

इरविंग फिशर (Irving Fisher) ने मुद्रा के परिमाण सिद्धांत का समीकरण प्रस्तुत किया, जो यह बताता है कि मुद्रा की मात्रा और कीमत स्तर के बीच सीधा और आनुपातिक संबंध होता है।

फिशर का प्रसिद्ध विनिमय समीकरण (Equation of Exchange) है:

$$MV = PT \quad \text{या} \quad P = \frac{MV}{T}$$

जहाँ:

M = मुद्रा की मात्रा

V = मुद्रा का चलन वेग (Velocity)

P = सामान्य कीमत स्तर

T = सौदों की कुल संख्या (Transactions)

यदि बैंक साख (M') और उसके वेग (V') को भी शामिल करें, तो समीकरण होता है: $MV + M'V' = PT$

फिशर के अनुसार, यदि V और T स्थिर रहें, तो मुद्रा की मात्रा (M) को दोगुना करने पर कीमत स्तर (P) भी दोगुना हो जाएगा और मुद्रा का मूल्य (क्रय शक्ति) आधा रह जाएगा।

16. मुद्रा परिमाण सिद्धांत का कैम्ब्रिज समीकरण (Cash Balances Approach) क्या है?

कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों (मार्शल, पिगू, रोबर्टसन और केन्स) ने फिशर के 'विनिमय दृष्टिकोण' के स्थान पर 'नकद शेष दृष्टिकोण' विकसित किया। उन्होंने मुद्रा के विनिमय माध्यम कार्य के बजाय मूल्य के संचय कार्य पर बल दिया।

इसके अनुसार, लोग अपनी वास्तविक आय का एक निश्चित हिस्सा नकद रूप में अपने पास रखना चाहते हैं, जिसे ' k ' कहा जाता है।

मार्शल का समीकरण:

$$M = kPY$$

जहाँ:

$M^d =$ मुद्रा की पूर्ति

$Y^d =$ वास्तविक राष्ट्रीय आय

$P^d =$ कीमत स्तर

$k =$ आय का वह भाग जिसे लोग नकद रखना चाहते हैं

कैम्ब्रिज दृष्टिकोण फिशर के सिद्धांत से बेहतर माना जाता है क्योंकि यह मुद्रा की मांग पर अधिक ध्यान देता है और मानव व्यवहार (आय का नकद संचय) को शामिल करता है।

17. केन्स का तरलता अधिमान सिद्धांत (Liquidity Preference Theory) क्या है?

केन्स के अनुसार, ब्याज दर एक पूर्णतः मौद्रिक घटना है, जो मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है। लोग अपनी संपत्ति को नकद रूप (तरलता) में रखना पसंद करते हैं, जिसे तरलता अधिमान कहा जाता है।

केन्स ने मुद्रा की मांग के तीन मुख्य उद्देश्य बताए हैं:

लेन-देन का उद्देश्य (L_1): दैनिक खर्चों के लिए नकद रखना (यह आय पर निर्भर करता है)।

सावधानी का उद्देश्य (L_2): भविष्य की आपात स्थितियों के लिए नकद रखना (यह भी आय पर निर्भर करता है)।

सट्टा उद्देश्य (L_3): परिसंपत्तियों (बांड/शेयर) से लाभ कमाने के लिए नकद रखना (यह ब्याज दर पर निर्भर करता है)।

कुल मुद्रा की मांग $L = L_1(Y) + L_2(r) + L_3(r)$ होती है। ब्याज दर और सट्टा मुद्रा मांग के बीच विपरीत संबंध होता है।

18. तरलता जाल (Liquidity Trap) से आप क्या समझते हैं?

तरलता जाल केन्स के ब्याज दर सिद्धांत की एक विशेष स्थिति है। यह तब उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था में ब्याज दर अपने न्यूनतम संभव स्तर पर पहुंच जाती है।

इस स्थिति की मुख्य विशेषताएं:

बहुत कम ब्याज दर पर, बांड की कीमतें अत्यधिक उच्च होती हैं।

लोगों को डर होता है कि भविष्य में ब्याज दरें बढ़ेंगी और बांड की कीमतें गिरेंगी, जिससे उन्हें पूंजीगत हानि होगी।

इसलिए, लोग बांड में निवेश करने के बजाय संपूर्ण अतिरिक्त मुद्रा को नकद रूप में अपने पास जमा रखने लगते हैं।

तरलता जाल की स्थिति में सट्टा मुद्रा मांग वक्र पूर्णतः लोचदार (Horizontal) हो जाता है। ऐसी स्थिति में मौद्रिक नीति पूरी तरह निष्प्रभावी हो जाती है, क्योंकि केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में डाली गई अतिरिक्त तरलता से भी ब्याज दर और नीचे नहीं गिरती।

19. मुद्रास्फीति (Inflation) क्या है? इसके मुख्य प्रकार कौन-कौन से हैं?

मुद्रास्फीति वह स्थिति है जिसमें अर्थव्यवस्था में सामान्य कीमत स्तर में निरंतर और उल्लेखनीय वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा की क्रय शक्ति घट जाती है। केवल कुछ वस्तुओं की कीमत बढ़ना मुद्रास्फीति नहीं है।

गति के आधार पर मुद्रास्फीति के प्रकार:

रेंगती मुद्रास्फीति (Creeping Inflation): कीमत वृद्धि 2-3% प्रतिवर्ष (अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी)।

चलती मुद्रास्फीति (Walking Inflation): कीमत वृद्धि 3-10% प्रतिवर्ष।

दौड़ती मुद्रास्फीति (Running Inflation): कीमत वृद्धि 10-20% प्रतिवर्ष।

अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation): कीमतें अत्यंत तीव्र गति से (जैसे 50% से अधिक प्रतिमाह) बढ़ती हैं और मुद्रा प्रणाली चरमरा जाती है।

कारणों के आधार पर: मांग-प्रेरित (Demand-Pull) और लागत-वृद्धि (Cost-Push) मुद्रास्फीति।

20. मांग-प्रेरित और लागत-वृद्धि मुद्रास्फीति में क्या अंतर है?

मुद्रास्फीति के दो मुख्य कारण होते हैं:

मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation):

यह तब होती है जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग (\$AD\$) उनकी कुल पूर्ति (\$AS\$) से अधिक हो जाती है।

इसे "अत्यधिक धन, कम वस्तुएं" (Too much money chasing too few goods) की स्थिति कहा जाता है।

इसके कारणों में जनसंख्या वृद्धि, सरकारी व्यय में वृद्धि, या मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि शामिल हैं।

लागत-वृद्धि मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation):

यह उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण होती है, भले ही मांग न बढ़ी हो।

जब कच्चे माल, मजदूरी या ईंधन (जैसे कूड ऑयल) की कीमतें बढ़ती हैं, तो फर्म अपने लाभ को बनाए रखने के लिए अंतिम वस्तुओं के दाम बढ़ा देती हैं।

इसे आपूर्ति पक्षीय मुद्रास्फीति भी कहते हैं।

21. स्फीतिक अंतराल (Inflationary Gap) और अवस्फीतिक अंतराल (Deflationary Gap) क्या हैं?

केन्स ने पूर्ण रोजगार की स्थिति के संदर्भ में इन दोनों अवधारणाओं को स्पष्ट किया:

स्फीतिक अंतराल (Inflationary Gap): जब पूर्ण रोजगार के स्तर पर अर्थव्यवस्था में कुल मांग, पूर्ण रोजगार पूर्ति के स्तर से अधिक हो जाती है, तो इस अतिरिक्त मांग को स्फीतिक अंतराल कहते हैं। यह अर्थव्यवस्था में बिना वास्तविक उत्पादन बढ़ाए केवल कीमतों में वृद्धि लाता है।

अवस्फीतिक अंतराल (Deflationary Gap): जब पूर्ण रोजगार के स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक कुल मांग की तुलना में वास्तविक कुल मांग कम रह जाती है, तो इसे अवस्फीतिक अंतराल कहते हैं। यह अर्थव्यवस्था में मंदी, उत्पादन में गिरावट और बेरोजगारी को जन्म देता है।

दोनों ही स्थितियां अर्थव्यवस्था में असंतुलन पैदा करती हैं, जिन्हें राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों द्वारा ठीक किया जाता है।

22. केंद्रीय बैंक (Central Bank) के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं?

केंद्रीय बैंक (जैसे भारत में RBI) देश की मौद्रिक और बैंकिंग प्रणाली का शीर्ष संस्थान होता है। इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था में स्थायित्व और विकास को बढ़ावा देना है।

इसके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

नोट जारी करने का एकाधिकार: देश में कानूनी निविदा (Currency) जारी करने का अधिकार केवल इसके पास होता है।

सरकार का बैंक और सलाहकार: यह सरकार के खाते संचालित करता है और वित्तीय सलाह देता है।

बैंकों का बैंक और अंतिम ऋणदाता: यह व्यावसायिक बैंकों के नकद कोष रखता है और संकट के समय उन्हें ऋण देता है।

विदेशी मुद्रा भंडार का संरक्षक: देश के स्वर्ण और विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन।

साख नियंत्रण (Credit Control): मौद्रिक नीति के माध्यम से साख और मुद्रा की मात्रा को नियंत्रित करना।

23. मौद्रिक नीति (Monetary Policy) क्या है? इसके परिमाणात्मक (Quantitative) उपकरण कौन से हैं?

मौद्रिक नीति केंद्रीय बैंक की वह नीति है जिसके माध्यम से वह आर्थिक उद्देश्यों (जैसे मूल्य स्थिरता, उच्च विकास दर) को प्राप्त करने के लिए मुद्रा की पूर्ति और ब्याज दरों को नियंत्रित करता है।

इसके परिमाणात्मक उपकरण (जो साख की कुल मात्रा को प्रभावित करते हैं) निम्नलिखित हैं:

बैंक दर (Bank Rate): वह दर जिस पर केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों को दीर्घावधि ऋण देता है।

रेपो दर (Repo Rate): वह दर जिस पर केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों को अल्पकालिक ऋण देता है।

रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate): जिस दर पर केंद्रीय बैंक बैंकों से तरलता स्वीकार करता है।

नकद आरक्षित अनुपात (CRR): जमा राशि का वह प्रतिशत जो बैंकों को केंद्रीय बैंक के पास नकद रखना अनिवार्य है।

वैधानिक तरलता अनुपात (SLR): जमा का वह भाग जो बैंकों को अपने पास तरल रूप में रखना होता है।

खुले बाजार की क्रियाएं (OMO): सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय।

24. व्यावसायिक बैंक (Commercial Banks) साख का सृजन (Credit Creation) कैसे करते हैं?

व्यावसायिक बैंकों का एक मुख्य कार्य साख सृजन करना है। बैंक केवल जमा स्वीकार करने और ऋण देने का काम ही नहीं करते, बल्कि वे अपनी प्राथमिक जमाओं के आधार पर कई गुना व्युत्पन्न जमाएँ (Derivative Deposits) निर्मित करते हैं।

यह प्रक्रिया इस प्रकार कार्य करती है:

जब कोई व्यक्ति बैंक में पैसा जमा करता है (प्राथमिक जमा), तो बैंक कानूनी आवश्यकता अनुसार उसका एक हिस्सा नकद आरक्षित अनुपात (CRR) के रूप में रखता है।

शेष राशि को बैंक किसी अन्य व्यक्ति को ऋण के रूप में दे देता है।

बैंक यह ऋण नकद न देकर ऋणी के नाम से एक खाता खोलकर उसमें जमा कर देता है। यह व्युत्पन्न जमा कहलाती है।

साख गुणक (Credit Multiplier) का सूत्र है:

$$\text{साख गुणक} = \frac{1}{\text{CRR}}$$

यदि $\text{CRR} = 10\%$ है, तो ₹100 की प्राथमिक जमा से बैंक $1 / 0.10 = 10$ गुना यानी ₹1000 का साख सृजन कर सकते हैं।

25. राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) क्या है? इसके मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

राजकोषीय नीति से तात्पर्य सरकार की उस नीति से है जिसके अंतर्गत वह अपने कराधान (Taxation), सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure), और सार्वजनिक ऋण (Public Debt) के माध्यम से अर्थव्यवस्था के संचालन को प्रभावित करती है।

इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

आर्थिक विकास की गति को तेज करना: बुनियादी ढांचे और पूंजीगत परिसंपत्तियों में निवेश करके।

कीमत स्थिरता बनाए रखना: मुद्रास्फीति या मंदी के समय करें और सरकारी खर्चों में समायोजन करना।

आय और धन की असमानता को कम करना: प्रगतिशील कराधान (Progressive Taxation) के माध्यम से अमीरों पर अधिक कर लगाना और गरीबों पर कल्याणकारी व्यय करना।

पूर्ण रोजगार की प्राप्ति: सार्वजनिक निर्माण कार्यों में निवेश बढ़ाकर रोजगार के अवसर पैदा करना।

26. व्यापार चक्र (Trade/Business Cycle) की विभिन्न अवस्थाएं कौन सी हैं?

व्यापार चक्र का अर्थ किसी अर्थव्यवस्था में समय के साथ कुल राष्ट्रीय उत्पादन, आय और रोजगार के स्तर में होने वाले नियमित उतार-चढ़ाव (मंदी और तेजी) से है।

इसकी मुख्य रूप से चार अवस्थाएं होती हैं:

समृद्धि/तेजी (Boom/Prosperity): उत्पादन, रोजगार, कीमतें और लाभ अपने उच्चतम स्तर पर होते हैं।

प्रतिसार/सुस्ती (Recession): आर्थिक गतिविधियों में गिरावट शुरू होती है, मांग घटने लगती है।

अवसाद/मंदी (Depression/Trough): यह व्यापार चक्र का निम्नतम बिंदु है; अत्यधिक बेरोजगारी, मांग में भारी कमी और व्यावसायिक निराशा होती है।

पुनरुत्थान/सुधार (Recovery): उत्पादन और निवेश धीरे-धीरे पुनः बढ़ने लगते हैं और अर्थव्यवस्था फिर से समृद्धि की ओर बढ़ती है।

27. फिलिप्स वक्र (Phillips Curve) क्या दर्शाता है?

अल्बर्न विलियम फिलिप्स द्वारा 1958 में प्रतिपादित फिलिप्स वक्र मुद्रास्फीति की दर और बेरोजगारी की दर के बीच एक विपरीत (Inverse) संबंध को दर्शाता है।

इस सिद्धांत के मुख्य बिंदु:

यदि सरकार बेरोजगारी दर को कम करना चाहती है, तो अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की दर बढ़ जाएगी।

इसके विपरीत, यदि मुद्रास्फीति को नियंत्रित किया जाता है, तो बेरोजगारी की दर बढ़ जाएगी।

अतः नीति निर्माताओं को इन दोनों के बीच एक संतुलन (Trade-off) चुनना पड़ता है।

हालाँकि, 1970 के दशक में स्टैगफ्लेशन (Stagflation) की स्थिति में यह अल्पकालिक फिलिप्स वक्र विफल हो गया, जहाँ उच्च मुद्रास्फीति और उच्च बेरोजगारी दोनों एक साथ देखी गईं। मिल्टन फ्रीडमैन ने तर्क दिया कि दीर्घकाल में फिलिप्स वक्र एक लंबवत (Vertical) रेखा होता है।

28. स्टैगफ्लेशन (Stagflation) से आप क्या समझते हैं?

स्टैगफ्लेशन अर्थशास्त्र की एक ऐसी स्थिति है जहाँ अर्थव्यवस्था में दो विपरीत और प्रतिकूल परिस्थितियाँ एक साथ विद्यमान होती हैं:

आर्थिक ठहराव (Stagnation): इसमें GDP वृद्धि दर बहुत धीमी होती है या उत्पादन स्थिर हो जाता है, जिससे उच्च बेरोजगारी की स्थिति बनती है।

मुद्रास्फीति (Inflation): वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में निरंतर वृद्धि होती रहती है।

यह स्थिति पारंपरिक आर्थिक सिद्धांतों (जैसे प्रारंभिक फिलिप्स वक्र) के विपरीत है, जो मानते थे कि मुद्रास्फीति केवल आर्थिक वृद्धि और कम बेरोजगारी के समय ही होती है।

यह आमतौर पर आपूर्ति पक्ष के झटकों (Supply Shocks) के कारण होता है, जैसे कि 1970 के दशक में कच्चे तेल की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि। इसका समाधान करना पारंपरिक मौद्रिक या राजकोषीय नीतियों के लिए अत्यंत कठिन होता है।

29. IS-LM मॉडल क्या है?

IS-LM मॉडल को जॉन हिक्स और एल्विन हैनसन द्वारा केन्स के विचारों को स्पष्ट करने के लिए विकसित किया गया था। यह मॉडल वस्तु बाजार (Goods Market) और मुद्रा बाजार (Money Market) के एक साथ संतुलन को दर्शाता है।

IS वक्र (Investment-Savings): यह वस्तु बाजार के संतुलन को दर्शाता है। यह दिखाता है कि विभिन्न ब्याज दरों पर आय के कौन से स्तर हैं जहाँ कुल बचत और कुल निवेश बराबर होते हैं। यह वक्र नीचे की ओर ढालू (Negative slope) होता है।

LM वक्र (Liquidity-Money): यह मुद्रा बाजार के संतुलन को दर्शाता है। यह उन सभी ब्याज दरों और आय के स्तरों को जोड़ता है जहाँ मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति बराबर होती है। यह वक्र ऊपर की ओर ढालू (Positive slope) होता है।

जहाँ IS और LM वक्र एक-दूसरे को काटते हैं, वहाँ सामान्य संतुलन की ब्याज दर (r) और राष्ट्रीय आय (Y) का निर्धारण एक साथ होता है।

30. भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BOP) क्या है? इसके मुख्य घटक कौन से हैं?

भुगतान संतुलन किसी देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच एक निश्चित अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) में किए गए सभी आर्थिक लेन-देन का एक व्यवस्थित लेखा-जोखा होता है।

इसके दो मुख्य खाते होते हैं:

चालू खाता (Current Account):

दृश्य मदों का व्यापार (वस्तुओं का आयात और निर्यात)।

अदृश्य मदों का व्यापार (सेवाएं जैसे बैंकिंग, पर्यटन)।

एकतरफा हस्तांतरण (उपहार, प्रेषित धन/Remittances)।

पूंजीगत खाता (Capital Account): इसमें वे लेन-देन शामिल हैं जो संपत्ति और देयताओं को बदलते हैं।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और पोर्टफोलियो निवेश (FPI)।

विदेशी ऋण और उधार।

यदि प्राप्तियों की तुलना में भुगतान अधिक है, तो इसे भुगतान संतुलन का घाटा कहा जाता है।

31. व्यापार संतुलन (Balance of Trade) और भुगतान संतुलन (BOP) में अंतर बताइए।

व्यापार संतुलन (BOT) और भुगतान संतुलन (BOP) दोनों ही अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण तत्व हैं, लेकिन इनमें स्पष्ट अंतर है:

आधार	व्यापार संतुलन (BOT)	भुगतान संतुलन (BOP)
क्षेत्र	यह संकीर्ण है (BOP का एक हिस्सा है)।	यह एक व्यापक अवधारणा है।
लेन-देन	केवल दृश्य मदों (वस्तुओं) का आयात-निर्यात।	दृश्य, अदृश्य (सेवाएं) और पूंजीगत लेन-देन।
खाता	केवल चालू खाते का भाग।	इसमें चालू और पूंजीगत दोनों खाते शामिल हैं।
संतुलन	यह घाटे या अधिशेष में हो सकता है।	बहीखाते की दृष्टि से यह हमेशा संतुलित रहता है।

32. विनिमय दर (Exchange Rate) क्या है? स्थिर और तैरती विनिमय दर प्रणाली में अंतर करें।

विदेशी विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की मुद्रा का दूसरे देश की मुद्रा के साथ विनिमय (बदलाव) किया जाता है। उदाहरण के लिए, 1 डॉलर = 83 रुपये।

दो मुख्य विनिमय दर प्रणालियाँ हैं:

स्थिर विनिमय दर प्रणाली (Fixed Exchange Rate):

इसमें सरकार या केंद्रीय बैंक अपनी मुद्रा का मूल्य किसी विदेशी मुद्रा या सोने के सापेक्ष स्थिर कर देता है।

यह विनिमय दर में अनिश्चितता को कम करती है, लेकिन इसके लिए भारी विदेशी मुद्रा भंडार की आवश्यकता होती है।

तैरती/लचीली विनिमय दर प्रणाली (Floating Exchange Rate):

इसमें विनिमय दर का निर्धारण बाजार में मुद्रा की मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है।

इसमें सरकार का कोई सीधा हस्तक्षेप नहीं होता और यह स्वतः संतुलित होती है।

33. मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation) और मूल्यहास (Depreciation) क्या है?

दोनों का अर्थ विदेशी मुद्राओं की तुलना में घरेलू मुद्रा के मूल्य में कमी होना है, लेकिन दोनों के कारण अलग-अलग हैं:

अवमूल्यन (Devaluation): जब स्थिर विनिमय दर प्रणाली के तहत सरकार या केंद्रीय बैंक आधिकारिक रूप से अपनी मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा की तुलना में कम करता है, तो इसे अवमूल्यन कहते हैं।

मूल्यहास (Depreciation): जब तैरती विनिमय दर प्रणाली के तहत बाजार में मांग और पूर्ति की शक्तियों के कारण स्वचालित रूप से घरेलू मुद्रा का मूल्य गिरता है, तो इसे मूल्यहास कहते हैं।

प्रभाव: दोनों ही स्थितियों में देश के निर्यात सस्ते हो जाते हैं (जिससे निर्यात बढ़ता है) और आयात महंगे हो जाते हैं।

34. शास्त्रीय (Classical) अर्थशास्त्र और केन्सियन (Keynesian) अर्थशास्त्र में मुख्य अंतर क्या हैं?

समष्टि अर्थशास्त्र में शास्त्रीय और केन्सियन विचारधाराएं दो प्रमुख दृष्टिकोण हैं:

आधार	शास्त्रीय अर्थशास्त्र (Adam Smith, Say)	केन्सियन अर्थशास्त्र (J.M. Keynes)
समय अवधि	दीर्घकाल पर बल देता है।	"दीर्घकाल में हम सब मर जाते हैं" - अल्पकाल पर बल।
रोजगार	अर्थव्यवस्था में स्वतः पूर्ण रोजगार रहता है।	अपूर्ण रोजगार संतुलन संभव है।
सरकारी हस्तक्षेप	अ-हस्तक्षेप (Laissez-faire) की नीति।	अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक।
बाजार संतुलन	लचीली मजदूरी और कीमतों द्वारा स्वतः संतुलन।	मजदूरी और कीमतें चिपचिपी (Sticky) होती हैं।
मुख्य जोर	पूर्ति पक्ष (Supply Side) पर।	मांग पक्ष (Effective Demand) पर।

35. केन्स का मनोवैज्ञानिक उपभोग नियम (Psychological Law of Consumption) क्या है?

केन्स का मनोवैज्ञानिक उपभोग नियम यह बताता है कि जब मानव समाज में आय बढ़ती है, तो उपभोग व्यय भी बढ़ता है, लेकिन आय में होने वाली वृद्धि की तुलना में उपभोग में वृद्धि कम अनुपात में होती है।

इसके तीन मुख्य और अंतर्संबंधित भाग हैं:

जब कुल आय बढ़ती है, तो कुल उपभोग भी बढ़ता है, लेकिन आय की तुलना में कम मात्रा में।

बढ़ी हुई आय उपभोग व्यय और बचत के बीच विभाजित हो जाती है ($\Delta Y = \Delta C + \Delta S$)।

आय में वृद्धि से उपभोग और बचत दोनों में वृद्धि होती है, कभी भी ऐसा नहीं होता कि आय बढ़े और उपभोग या बचत में से कोई एक घट जाए।

यह नियम दर्शाता है कि MPC का मान 0 से अधिक और 1 से कम ($0 < MPC < 1$) होता है, जो गुणक सिद्धांत का आधार है।

36. स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment) और प्रेरित निवेश (Induced Investment) में अंतर बताइए।

निवेश को दो मुख्य भागों में बांटा जाता है:

स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment):

यह निवेश आय या लाभ के स्तर से स्वतंत्र होता है।

यह आय वक्र के समानांतर (Horizontal) होता है।

यह मुख्य रूप से सरकार द्वारा लोक कल्याण, बुनियादी ढांचे (सड़क, पुल, स्कूल) के निर्माण के लिए किया जाता है।

यह तकनीकी प्रगति, जनसंख्या वृद्धि या सामाजिक नीतियों से प्रभावित होता है।

प्रेरित निवेश (Induced Investment):

यह निवेश आय और लाभ के स्तर पर निर्भर करता है।

जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था में आय और मांग बढ़ती है, यह निवेश भी बढ़ता है।

यह निजी क्षेत्र के उद्योगपतियों द्वारा लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है।

37. सरकारी बजट (Government Budget) क्या है? इसके मुख्य घटक कौन से हैं?

सरकारी बजट एक वित्तीय वर्ष के दौरान सरकार की अनुमानित प्राप्तियों (Revenue) और अनुमानित व्ययों (Expenditure) का एक वार्षिक विवरण होता है।

बजट के मुख्य घटक:

बजट प्राप्तियां (Budget Receipts):

राजस्व प्राप्तियां: जिनसे न तो कोई देयता पैदा होती है और न ही परिसंपत्तियां घटती हैं (कर राजस्व और गैर-कर राजस्व)।

पूंजीगत प्राप्तियां: जिनसे सरकार की देयता बढ़ती है या परिसंपत्तियां घटती हैं (ऋण लेना, विनिवेश)।

बजट व्यय (Budget Expenditure):

राजस्व व्यय: प्रशासनिक खर्च, सब्सिडी, ब्याज भुगतान (पूंजी निर्माण नहीं होता)।

पूंजीगत व्यय: बुनियादी ढांचे पर व्यय, ऋणों का भुगतान (पूंजीगत परिसंपत्तियों का निर्माण होता है)।

38. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) और प्राथमिक घाटा (Primary Deficit) क्या हैं?

सरकारी बजट में घाटे के विभिन्न माप अर्थव्यवस्था की वित्तीय स्थिति को दर्शाते हैं:

राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit): यह सरकार के कुल व्यय और उसकी कुल प्राप्तियों (उधार को छोड़कर) के बीच का अंतर है।

$$\text{राजकोषीय घाटा} = \text{कुल व्यय} - (\text{राजस्व प्राप्तियां} + \text{गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियां})$$

यह दर्शाता है कि सरकार को अपने खर्चों को पूरा करने के लिए कुल कितने ऋण की आवश्यकता है।

प्राथमिक घाटा (Primary Deficit): यह राजकोषीय घाटे में से पिछले ऋणों पर किए जाने वाले ब्याज भुगतान को घटाने पर प्राप्त होता है।

$$\text{प्राथमिक घाटा} = \text{राजकोषीय घाटा} - \text{ब्याज भुगतान}$$

यह दर्शाता है कि वर्तमान वर्ष के सरकारी कामकाज के लिए उधारी की कितनी आवश्यकता है, अतीत के दायित्वों को छोड़कर।

39. आर्थिक समृद्धि (Economic Growth) और आर्थिक विकास (Economic Development) में क्या अंतर है?

यद्यपि दोनों शब्दों का प्रयोग अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता है, लेकिन अर्थशास्त्र में इनमें महत्वपूर्ण अंतर है:

आर्थिक समृद्धि (Economic Growth):

यह एक परिमाणात्मक (Quantitative) अवधारणा है।

इसका तात्पर्य केवल समय के साथ देश के वास्तविक GDP या प्रति व्यक्ति आय में निरंतर वृद्धि से है।

यह विकसित देशों के लिए अधिक प्रासंगिक है।

आर्थिक विकास (Economic Development):

यह एक गुणात्मक (Qualitative) अवधारणा है।

इसमें आय में वृद्धि के साथ-साथ संस्थागत, संरचनात्मक और सामाजिक परिवर्तनों (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी में कमी) को शामिल किया जाता है।

यह विकासशील देशों की समस्याओं से संबंधित है।

आर्थिक विकास = आर्थिक समृद्धि + सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन।

40. मानव विकास सूचकांक (Human Development Index - HDI) क्या है?

मानव विकास सूचकांक (HDI) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा विकसित एक संयुक्त सूचकांक है, जिसका उपयोग केवल GDP के बजाय मानव कल्याण के आधार पर देशों के विकास के स्तर को मापने के लिए किया जाता है। इसे 1990 में महबूब उल हक और अमर्त्य सेन ने विकसित किया था।

HDI तीन मूल आयामों पर आधारित है:

दीर्घ और स्वस्थ जीवन: जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) द्वारा मापा जाता है।

ज्ञान/शिक्षा तक पहुंच: स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष और स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष।

सभ्य जीवन स्तर: प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI per capita - PPP)।

HDI का मान 0 और 1 के बीच होता है। 1 के करीब मान उच्च मानव विकास को दर्शाता है।

41. पूंजी की सीमांत दक्षता (Marginal Efficiency of Capital - MEC) क्या है?

केन्स के अनुसार, पूंजी की सीमांत दक्षता (MEC) किसी नई पूंजीगत परिसंपत्ति की एक अतिरिक्त इकाई से मिलने वाली अनुमानित लाभप्रदता या प्रतिफल की दर है।

MEC दो प्रमुख कारकों पर निर्भर करती है:

प्रत्याशित आय (Prospective Yield): उस पूंजीगत परिसंपत्ति से उसके पूरे जीवनकाल में प्राप्त होने वाली शुद्ध वार्षिक आय का अनुमान।

पूर्तिकर मूल्य/प्रतिस्थापन लागत (Supply Price): उस नई पूंजीगत परिसंपत्ति को खरीदने या निर्माण करने की कुल लागत।

निवेश का निर्णय: एक निवेशक तब तक नया निवेश करेगा जब तक कि पूंजी की सीमांत दक्षता (MEC) बाजार की ब्याज दर (r) से अधिक या उसके बराबर रहती है ($MEC \geq r$)।

42. गुणक की अनुकूल (Forward) और प्रतिकूल (Backward) क्रिया क्या है?

गुणक दोनों दिशाओं में कार्य करता है - आय को बढ़ाने में भी और आय को घटाने में भी:

अनुकूल क्रिया (Forward Operation):

जब स्वायत्त निवेश में वृद्धि (ΔI) की जाती है, तो राष्ट्रीय आय में निवेश वृद्धि से कई गुना अधिक वृद्धि (ΔY) होती है।

उदाहरण: ₹ 100 करोड़ के निवेश से (यदि गुणक = 4) आय में ₹ 400 करोड़ की वृद्धि होगी।

प्रतिकूल क्रिया (Backward Operation):

जब निवेश में कटौती की जाती है, तो राष्ट्रीय आय में कई गुना अधिक कमी आती है।

यह अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत विनाशकारी होता है क्योंकि निवेश में थोड़ी सी गिरावट आय, उपभोग और रोजगार में भारी मंदी ला सकती है।

43. मौद्रिक आय (Nominal Income) और वास्तविक आय (Real Income) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

आय की गणना दो रूपों में की जा सकती है:

मौद्रिक आय (Nominal Income): यह किसी व्यक्ति या देश की वह आय है जो वर्तमान बाजार कीमतों पर मुद्रा के रूप में मापी जाती है। यदि किसी व्यक्ति का वेतन ₹ 50,000 प्रति माह है, तो यह उसकी मौद्रिक आय है। यह मुद्रास्फीति के प्रभाव को ध्यान में नहीं रखती।

वास्तविक आय (Real Income): यह मौद्रिक आय की क्रय शक्ति (Purchasing Power) को दर्शाती है। अर्थात्, मौद्रिक आय से वास्तव में कितनी वस्तुएं और सेवाएं खरीदी जा सकती हैं।

$$\text{वास्तविक आय} = \frac{\text{मौद्रिक आय}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$$

यदि मौद्रिक आय 10% बढ़ती है लेकिन कीमतें भी 10% बढ़ जाती हैं, तो वास्तविक आय अपरिवर्तित रहती है।

44. केन्स का ब्याज दर सिद्धांत और क्लासिकल ब्याज दर सिद्धांत में अंतर स्पष्ट करें।

ब्याज दर के निर्धारण के संबंध में दो प्रमुख दृष्टिकोण हैं:

शास्त्रीय (क्लासिकल) सिद्धांत:

यह एक वास्तविक सिद्धांत (Real Theory) है।

इसके अनुसार ब्याज दर का निर्धारण वास्तविक कारकों - बचत (Savings) और निवेश (Investment) की शक्तियों द्वारा होता है।

ब्याज बचत करने का पुरस्कार है।

केन्सियन सिद्धांत:

यह एक मौद्रिक सिद्धांत (Monetary Theory) है।

इसके अनुसार ब्याज दर का निर्धारण मुद्रा की मांग (तरलता अधिमान) और मुद्रा की पूर्ति द्वारा होता है।

ब्याज केवल नकद रूप का त्याग करने (तरलता छोड़ने) का पुरस्कार है।

45. बंद अर्थव्यवस्था (Closed Economy) और खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy) में अंतर बताएं।

अर्थव्यवस्थाएं अंतरराष्ट्रीय व्यापार के आधार पर दो प्रकार की होती हैं:

बंद अर्थव्यवस्था (Closed Economy):

यह वह अर्थव्यवस्था है जिसका शेष विश्व के साथ कोई आर्थिक संबंध (व्यापार या वित्तीय लेनदेन) नहीं होता।

इसमें न तो आयात-निर्यात होता है और न ही विदेशी पूंजी का आवागमन।

GDP और GNP समान होते हैं ($Y = C + I + G$)

आधुनिक समय में ऐसी अर्थव्यवस्था का अस्तित्व केवल सैद्धांतिक है।

खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy):

यह वह अर्थव्यवस्था है जो विश्व के अन्य देशों के साथ वस्तुओं, सेवाओं और वित्तीय परिसंपत्तियों का व्यापार करती है।

इसमें आयात, निर्यात और विदेशी निवेश शामिल होते हैं ($Y = C + I + G + (X - M)$)

46. से का नियम विफल क्यों हुआ? (केन्स की आपत्तियाँ)

1930 की महामंदी (Great Depression) ने शास्त्रीय अर्थशास्त्र और से के नियम की विफलताओं को उजागर किया। केन्स ने निम्नलिखित आधारों पर इसकी आलोचना की:

बचत और निवेश का स्वतः संतुलन न होना: क्लासिक अर्थशास्त्री मानते थे कि ब्याज दर बचत और निवेश को बराबर करती है, लेकिन केन्स ने दिखाया कि बचत आय पर निर्भर करती है, ब्याज पर नहीं।

मजदूरी में कटौती बेरोजगारी का समाधान नहीं: शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों के अनुसार मजदूरी घटाने से रोजगार बढ़ता है। केन्स ने तर्क दिया कि मजदूरी घटने से मजदूरों की क्रय शक्ति घटेगी, जिससे कुल मांग गिरेगी और बेरोजगारी और बढ़ेगी।

अति-उत्पादन संभव है: केन्स ने साबित किया कि कुल मांग की कमी के कारण अर्थव्यवस्था में सामान्य अति-उत्पादन और बेरोजगारी हो सकती है।

47. मौद्रिक नीति और राजकोषीय नीति में तुलना कीजिए।

दोनों ही नीतियां अर्थव्यवस्था में स्थिरता और विकास के लिए उपयोग की जाती हैं, लेकिन इनके संचालक और उपकरण अलग हैं:

आधार	मौद्रिक नीति	राजकोषीय नीति
संचालक	देश का केंद्रीय बैंक (उदा. RBI)।	देश की सरकार (वित्त मंत्रालय)।
उपकरण	ब्याज दरें, रेपो दर, CRR, खुले बाजार की क्रियाएं।	कराधान, सरकारी व्यय, सार्वजनिक ऋण।
लक्ष्य	मुद्रास्फीति नियंत्रण, तरलता प्रबंधन।	आर्थिक वृद्धि, गरीबी उन्मूलन, संपत्ति वितरण।
गति	निर्णयों को तेजी से लागू किया जा सकता है।	बजटीय प्रक्रियाओं के कारण लागू होने में समय लगता है।

मंदी या उच्च मुद्रास्फीति से निपटने के लिए दोनों नीतियों का एक साथ समन्वित उपयोग आवश्यक होता है।

48. प्रत्यक्ष कर (Direct Tax) और अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax) में क्या अंतर है?

सरकार द्वारा वसूले जाने वाले कर दो प्रकार के होते हैं:

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax):

यह कर उस व्यक्ति पर लगाया जाता है जो कानूनी रूप से इसे चुकाने के लिए उत्तरदायी है।

इसका कर-आघात (Impact) और कर-पात (Incidence) एक ही व्यक्ति पर पड़ता है (इसे दूसरों पर स्थानांतरित नहीं किया जा सकता)।

उदाहरण: आयकर (Income Tax), निगम कर (Corporate Tax)।

ये आमतौर पर प्रगतिशील प्रकृति के होते हैं (अमीरों पर अधिक)।

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax):

यह कर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन या बिक्री पर लगाया जाता है।

इसका भार अंतिम उपभोक्ता पर स्थानांतरित कर दिया जाता है।

उदाहरण: GST, सीमा शुल्क (Customs Duty)।

49. व्यापार संतुलन में असंतुलन (घाटे) को ठीक करने के उपाय क्या हैं?

जब किसी देश का भुगतान संतुलन या व्यापार संतुलन लगातार घाटे में रहता है (आयात > निर्यात), तो इसे ठीक करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जाते हैं:

मौद्रिक उपाय:

अवमूल्यन/मूल्यहास: स्वदेशी मुद्रा का मूल्य घटाने से निर्यात सस्ते और आयात महंगे हो जाते हैं, जिससे घाटा कम होता है।

मुद्रा संकुचन: मौद्रिक नीति को कठोर करके देश में आय और कीमतों को घटाना, जिससे आयात मांग कम हो।

गैर-मौद्रिक (व्यापारिक) उपाय:

निर्यात प्रोत्साहन: निर्यात पर सब्सिडी देना, कर छूट देना।

आयात कोटा और शुल्क: आयातित वस्तुओं पर भारी टैरिफ (Tariff) लगाना या आयात की मात्रा सीमित करना।

आयात प्रतिस्थापन: देश के भीतर ही उन वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाना जिन्हें आयात किया जाता है।

50. केन्स का बेरोजगारी सिद्धांत क्या है?

केन्स से पहले शास्त्रीय अर्थशास्त्री मानते थे कि बाजार में केवल ऐच्छिक बेरोजगारी (Voluntary Unemployment) और घर्षणात्मक बेरोजगारी हो सकती है, और अनैच्छिक बेरोजगारी असंभव है।

केन्स ने इस विचार को खारिज करते हुए अनैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary Unemployment) की अवधारणा दी:

अनैच्छिक बेरोजगारी वह स्थिति है जहाँ लोग प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार और सक्षम हैं, लेकिन फिर भी उन्हें काम नहीं मिलता।

केन्स के अनुसार, बेरोजगारी का मुख्य कारण प्रभावी मांग की कमी (Deficiency of Effective Demand) है।

जब कुल मांग घटती है, तो फर्म उत्पादन कम कर देती हैं और मजदूरों को निकाल देती हैं।

इसका समाधान केवल सरकार द्वारा सार्वजनिक व्यय बढ़ाकर कुल मांग को पुनर्जीवित करने से ही संभव है।